International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 500-501

बौधन्याय परम्परा में आचार्य धर्मकीर्ति का स्थान

डॉ० धर्मपाल

Teacher in Government High school Ramghar Samba Jammu and Kashmir, India

प्रस्तवना

भारतीय दर्शन में न्याय की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। वेदों और उपनिषदों में भी इस परम्परा के दर्शन होने से जहाँ इसकी प्राचीनता स्पष्ट होती है, वहीं महर्षि वात्स्यायनकृत न्याससूत्र से इस परम्परा के सर्वत्र प्रसारित होने के प्रमाण आज भी लोक जीवन में द्रष्टव्य हैं। वास्तव में दर्शन शास्त्रीय परम्परा में एक दर्शन अपनी स्थापना और महत्ता के लिये दूसरे दर्शन पर आक्षेप कर अपने ही सिद्धान्तों को प्रमुख और दूसरे के सिद्धान्तों को गौण रखने की मीमांसा को संयोजया दिखता है। ठीक उसी परम्परा का पालन बौद्धाचार्यों ने भी किया है।

बौद्धाचार्यों में न्यायशास्त्र को स्वतन्त्र शास्त्र के रूप में प्रतिष्ठित करने का समग्र श्रेय आचार्य दिङ्नाग को है। इनके पहले भी कम से कम दो नैयायिक हो चुके थे – नागार्जुन एवं वसुबन्धु। नागार्जुन का प्रमाण–विषयक ग्रन्थ 'विग्रहव्यावर्तनी' थोड़ी ही देर पहले उपलब्ध हुआ है। इस ग्रन्थ में इन्होंने शून्यवाद के विरोधियों की युक्तियों का खण्डन कर व्यावहारिक रीति से प्रमाण की ही असत्यता सिद्ध कर दी हैं इसलिये इससे दिङ्नाग को ही प्रथम नैयायिक मानना अनुचित है, परन्तु वसुबन्धु का न्यायग्रन्थ अभी तक अप्राप्त है जबकि उनके अनेक अंश उद्धरणवाद के बौद्धाचार्यों एवं ब्राह्मण ग्रन्थों में अत्यधिक मात्रा में प्राप्त होते हैं। वसुबन्धु द्वारा प्रतिपादित न्याय सिद्धान्तों का खण्डन ब्राह्मण रचित ग्रन्थों में मिलता है। इस प्रकार के खण्डनों से अपने गुरु वसुबन्धु को बचाने के लिए आचार्य दिङ्नाग ने अपने प्रमाण समुच्चय नामक प्रमाण ग्रन्थ की रचना की। प्रमाण समुच्चय का मूल संस्कृत भाषा में उपलब्ध न होना विद्वानों के लिये अत्यन्त दुःख का विषय है। दिङ्नागरचित प्रमाणसमुच्चय नामक ग्रन्थ के खण्डन हेतु पाशुपातचार्य उद्योतकर ने अपना न्यायवार्तिक नामक विशिष्ट ग्रन्थ लिखा। इस न्यायवार्तिक की युक्तियों का खण्डन करने के लिये आचार्य धर्मकीर्ति ने प्रमाणवार्तिक जैसा प्रमेयबहुल ग्रन्थ काी रचना की। आचार्य दिङ्नागने अधिकांश बौद्धन्याय के सिद्धान्तों की नींव रखी है। दिङ्नाग जहाँ भी गये वहाँ उन्हें अपने विरोधियों से शास्त्रार्थ की करना पड़ा। प्रायः उनका सम्पूर्ण जीवन चोंटे करने और सहने में ही व्यतीत हुआ। यहाँ तक की बौद्ध साधु धर्मकीर्ति ने भी उनका खूब विरोध करने का प्रयत्न की, इत्सिंग ने इसका वर्णन प्रभावमय शब्दों में किया है। आचार्य धर्मकीर्ति ने ब्राह्मण नैयायिक उद्योतकर पर आक्षेप किया है। इसके विरुद्ध बृहदारण्यकवार्तिक के रचयिता मीमांसक सुरेश्वराचार्य और अष्टसाहस्री के रचयिता दिगम्बर जैन विद्यानन्दि ने धर्मकीर्तिकृत प्रत्यक्ष के लक्षण की समालोचना की है। दिङ्नाग के विरोध मे आचार्य धर्मकीर्ति कहते हैं कि 'दृष्टान्त' नाम का कोई साधन का अवयच नहीं है, क्योंकि इसका हेतु में अन्तर्भाव हो जाता है। यद्यपि स्थान–स्थान पर धर्मकीर्ति ने दिङ्नाग के मतों की आलोचना की है तथापि उनके प्रति आदर भी प्रकट किया है। एक प्रकार से प्रमाणवार्तिक दिङ्नाग के सिद्धान्तों की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत करती है। आचार्य दिङ्नाग से आचार्य धर्मकीर्ति पर्यन्त दो शताब्दी का समय बौद्ध न्याय के चरमोत्कर्ष का युग माना जाता है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि इन दो शताब्दियों के बीच में और कोई आचार्य हुए जिनका महत्त्व न्यायशास्त्र के इतिहास में कम नहीं। परन्तु ईश्वरसेन की कोई रचना नहीं मिलती। परन्तु धर्मकीर्ति के ऊपर इनका बहुत ही प्रभाव पड़ा, उसे इन्होंने स्वीकार किया है। प्रमाणवार्तिक की महानता का परिचय इसी से लग सकता है कि उसे मूल मानकर उसके टीकाग्रन्थों की एक परम्परा शुरू हो गयी जो केवल भारत में ही नहीं अपितु तिब्बत में भी फैली। शंकरस्वामी दिङ्नाग के साक्षात् शिष्य थे। इनकी महत्त्वपूर्ण रचना है न्यायप्रवेश। इस ग्रन्थ के सम्बन्ध में पर्याप्त मतभेद है। हमे इसे दिङ्नाग की ही रचना मानते हैं, परन्तु चीन देशज्ञ की परम्परा के अनुसार यह ग्रन्थ शंकरस्वामीरचित है। इस ग्रन्थ में पक्षाभास, हेत्वाभास तथा दृष्टान्ताभास की जो सूक्ष्म कल्पना की गई है वह न्यायशास्त्र के इतिहास में अपूर्व है। अवान्तरकालीन बौद्ध नैयायिकों में महापण्डित रत्नकीर्ति रचित 'अपोहसिद्धि' और 'क्षणभंगसिद्धि' आचार्य अशोक रचित 'अवयविनिकराकरण' तथा सामान्यदिक् प्रसारित और रत्नाकर शान्तिपाद का 'अन्तर्व्याप्ति समर्थन' बौद्धन्याय के निबन्ध ग्रन्थ हैं।

बौद्धन्याय परम्परा में आचार्य धर्मकीर्ति का स्थान 55 इतिहास भारतीय न्याय के इतिहास में गौरवपूर्ण तथा विशिष्ट स्थान रखता है।

आचार्य धर्मकीर्ति ने निम्नलिखित ग्रन्थों की रचना की – (1) प्रमाणवार्तिककारिका – यह ग्रन्थ मूल संस्कृत के लुप्त है। धर्मकीर्ति ने दिङ्नाग के प्रमाण समुच्चय को सुना और उसमें अशुद्धियाँ निकाली। उसी परिश्रम के फलस्वरूप यह ग्रन्थ रचा। (2) प्रमाणवार्तिकवृत्ति – यह प्रमाणवार्तिककारिका की टीका है। (3) प्रमाणविनिश्चय – इसमें न्यायबिन्दु के ही समान प्रत्यक्ष, स्वार्थानुमान और परार्थानुमान नाम के तीन परिच्छेद हैं। (4) न्याय बिन्दु – यह ग्रन्थ पाठकों के सामने है। (5) हेतु बिन्दुविवरण – इसमें तीन अध्याय हैं, जिनमें स्वभावहेतु, कार्यहेतु और अनुपलब्धि हेतु का वर्णन किया गया है। (6) तर्कन्याय – इस ग्रन्थ का मूल लुप्त है। (7) सन्तानान्तरसिद्धि, (8) सम्बन्धपरीक्षा और (9) सम्बन्धपरीक्षावृत्ति – यह सम्बन्धपरीक्षा की टीका है।

आचार्य धर्मकीर्ति के विषय में अध्ययन एवं खोज करने पर हमको डॉ० सतीशचन्द्र विद्याभूषण के इतिहास से विशेष कहीं भी अन्यत्र नहीं मिला। बौद्धन्याय में धर्मकीर्ति का क्या स्थान है यह जानने से पूर्व यह प्रश्न उपस्थित होता है कि बौद्धन्याय में धर्मकीर्ति का क्या स्थान है, क्योंकि दार्शनिक विषय की समालोचना केवल न्याय के आधार पर करना हम समुचित नहीं समझते। आचार्य दिङ्नाग आधुनिक बौद्धन्याय के जन्मदाता हैं। न्याय वार्तिककार उद्योकर ने अपने ग्रन्थ में गौतम न्याय–सूत्र के वात्स्यायन भाव्य की टीका की खूब समालोचना की है। उस समय इस समालोचना से बौद्धों का प्रभाव घट गया और ब्राह्मणों का प्रभाव बहुत कुछ बढ़ गया। दिङ्नाग से धर्मकीर्ति प्रतिष्ठा को पुनः जमाता। परन्तु धर्मकीर्ति ने जगह–जगह पर शास्त्रार्थ करके बौद्धमत का इतना प्रचार किया

कि उसके पश्चात् के सभी दर्शनों के दार्शनिकों ने उसकी समालोचना करने में ही अपना गौरव समझा। इन्होंने न्यासवार्तिक की भी समालोचना करने में ही अपना गौरव समझा। इन्होंने न्यासवार्तिक की भी समालोचना की थी। न्याय बिन्दु के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आचार्य धर्मकीर्ति बौद्धन्याय दर्शन के साथ–साथ अन्य भारतीय दर्शनों के भी धुरन्धर विद्वान थे, क्योंकि दृष्टान्ताभाास के वर्णन में उन्होंने थोड़े–थोड़े शब्दों में अन्य दर्शनों के सिद्धान्तों का अच्छा वर्णन किया है। इनके पश्चात् बौद्धनैयायिकों में ऐसा दमदार कोई भी नैयायिक नहीं हुआ। जहाँ दिङ्नाग को आधुनिक न्याय का जन्मदाता कहते हैं तो वहीं धर्मकीर्ति को बौद्धन्याय का उद्धारक कहना उचित होगा।